

मेरा नौकर राजू और मेरी बहन-5

“मेरी सेक्स कहानी के पिछले भाग मेरा नौकर राजू और मेरी बहन-4 में आपने पढ़ा कि मेरी छोटी बहन सीमा अपने नौकर के साथ पहली बार सेक्स करने जा रही... [\[Continue Reading\]](#) ...”

Story By: nitu patil (nitupatil)

Posted: Monday, July 16th, 2018

Categories: [नौकर-नौकरानी](#)

Online version: [मेरा नौकर राजू और मेरी बहन-5](#)

मेरा नौकर राजू और मेरी बहन-5

मेरी सेक्स कहानी के पिछले भाग

मेरा नौकर राजू और मेरी बहन-4

मैं आपने पढ़ा कि मेरी छोटी बहन सीमा अपने नौकर के साथ पहली बार सेक्स करने जा रही थी.

अब राजू नीचे से बिल्कुल नंगा हो गया था। उसका लंड अब बिल्कुल मेरे सामने नंगा डोल रहा था, मेरे हाथ और आंखें उस पर ही अटकी थी। उसने अब अपनी आंखें बंद कर दी थी और उसके हाथ मेरे स्तनों को प्यार से दबाने लगे थे।

मैं मन ही मन मुस्कुरा रही थी क्योंकि यह तगड़ा लंड मेरी चुत को कूटने वाला था और मेरी दो महीने की तड़प मिटाने वाला था। उससे भी बड़ी बात यह थी कि उस लंड की मैं मालकिन थी, वह लंड मेरे ही घर में था और जब मैं चाहूँ वह मेरे तन बदन की आग ठंडी करने वाला था।

मैं धीरे धीरे नीचे जाने लगी, मैं नीचे घुटनों के बल बैठ गई। अब उसका लंड मेरे सामने था, मेरे बिल्कुल सामने ... सिर्फ दो चार इंच दूर, वह मेरे सामने डोल रहा था। मेरे सामने खड़ा होकर वह मुझे चिढ़ा रहा था.

अब आगे :

मैं अपने हाथ उसके बालों के जंगल में घुमाने लगी तो उसने और अकड़कर मुझे सलामी दी। मैं हँस कर उसको देख रही थी। उसके जंगल में हाथ घूमाते समय अचानक ही राजू ने

अपना हाथ मेरे सिर पर रखा। मेरे सिर को अपने हाथ से पकड़कर वह मेरे होठों को अपने लंड के पास ले जाने लगा।

मेरे सिर एक एक मिलीमीटर आगे जा रहा था, मेरे होठ भी उसको अपने अंदर सामने के लिए बेकरार हो उठे थे। उसका लंड अब मेरे हाथों से बिल्कुल दो मिलीमीटर की दूरी पर था, उसके हाथों का दबाव भी बहुत बढ़ रहा था। मैं भी अब सब कुछ भुलाकर इस मूसल से अपनी चुत की शांति करने के बारे में ही सोच रही थी।

मैंने अपने होठ उसके लंड के स्वागत के लिए खोल दिये और सिर को थोड़ा और आगे लेकर गयी। मैंने उसके लंड की सुपारी को अपने होठों में पकड़ा, उसकी सुपारी उसके लंड की तरह ही बड़ी और सख्त थी। उसकी चॉकलेटी सुपारी को चूसते वक्त मुझे स्वर्ग में होने का अहसास हो रहा था और मुझे चेतना के प्रति जलन भी हो रही थी क्योंकि मुझसे पहले उसने उस लंड पर अपना हक दिखाया था।

मेरे होठ एक एक मिलीमीटर आगे बढ़ कर उसके लंड को अपने मुँह में ले रहे थे पीछे से मेरी जीभ भी उसके सुपारी पर घूमते हुए उसको गीला कर रही थी। उसके लंड का कुछ भी स्वाद नहीं लग रहा था, शायद कुछ ही देर पहले उसने अपना लंड साबुन से धोया था क्योंकि उसके लंड से साबुन की खुशबू आ रही थी।

मैंने उसका आधे से ज्यादा लंड मुँह में ले लिया था पर इससे ज्यादा अंदर नहीं जा सकता था। मेरा पूरा मुँह उसके लंड से भर गया था। मैं अपना मुँह आगे पीछे करके लंड को चूस रही थी और वह भी अपने हाथ मेरे सिर पर रखे मेरे सिर को आगे पीछे कर रहा था।

कुछ देर ऐसे ही चूसने के बाद उसने अपना लंड मेरे मुँह से निकाल लिया और अपने हाथों से मुठ मारने लगा। मैंने अपना हाथ उसके कलाई पर रखते हुए बोली- यह क्या कर रहे हो ?

“मेमसाब अब हमार मक्खन बाहर आवत है.” वह बोला ।

“हाँ तो ?” मैं बोली ।

“आप के मुंह में... ” वह इतना ही बोला तभी मैं उठ कर खड़ी हो गई, मैंने उसके हाथ की कलाई बहुत टाइट पकड़ी हुई थी ।

मैं उसे ऐसे ही धकेलते हुए पीछे बेड की तरफ ले गयी, वह मेरी तरफ आश्चर्य से देख रहा था । फिर मैंने उसे बेड पर बिठाया और उससे थोड़ा दूर जाकर खड़ी हो गयी । फिर मैंने अपनी नाइटी धीरे से उतार दी और उसके सामने पूरी नंगी हो गयी ।

“ईह का कर रही हो मेमसाब...” वह पूरा डर गया था । मैं सिर्फ उसको देख कर मुस्कुरा दी, नशा अब मुझ पर हावी हो रहा था ।

“चलो अब तुम मेरी चूसो.” मैं बेड पर एक पैर रख कर बोली ।

“नहीं मेमसाब... आप नशे में हैं.” वह बोला ।

“हाँ तो... तुम्हें बोला ना... सक करो !” मैं अपने हाथों से अपनी चुत का दाना मसलते हुए बोली ।

“नहीं मेमसाबम यह पाप होगा.”

उसके कहने पर मैं सिर्फ मुस्कुराई और अपना पैर बेड पर से उठाकर उसके सीने पर रखा और उसे बेड पर धकेला ।

वह अपने पैर नीचे रखते हुए ही बेड पर लेट गया । मैंने अपने दोनों घुटने उसके शरीर के आजु बाजू बेड पर रखे और बेड पर चलते चलते अपनी चुत उसके मुँह के ऊपर ले आयी । वह अचंभित होकर मेरी चुत को देख रहा था । मैंने अपने पैर फैलाते हुए मेरी चुत को उसके होठों से छह इंच पास ले आयी, आगे क्या होने वाला है इसी कल्पना से मेरे चुत से पानी छूटने लगा । मेरे पानी की एक बूंद उसके गालों पर गिरी ।

मैंने अपनी चुत को नीचे ले जाते हुए उसकी नाक को मेरी चुत पर रगड़ा, उसकी नाक

बराबर मेरे चुत के दाने से रगड़ खा रहा था। मैं एकदम अटक गई, मैं अपनी उत्तेजना के शिखर पर थी। मैं उसी अवस्था में उसके पहल का इंतजार का रही थी।

उसने भी मुझे ज्यादा देर इंतजार नहीं करने दिया, उसकी जीभ मेरे चुत के पास महसूस हुई, उसकी जीभ मेरी चुत के आजु बाजू स्पर्श कर रही थी। मैं भी अपनी कमर हिलाकर उसकी जीभ मेरी चुत में घुसाने की कोशिश करने लगी।

पर वह भी उल्टी दिशा में जीभ घूमा रहा था इस वजह से उसकी जीभ मेरे चुत में जाने के बजाय चुत को चारों बाजू से चाट रही थी। उसका स्पर्श मुझे अजीब उत्तेजना दे रही थी जो पहले कभी नहीं मिली।

थोड़ी ही देर बाद उसने मुझे तड़पाना बंद किया और जीभ कड़ी कर के मेरी चुत के अंदर घुसा दी तो मेरी चुत ने उसकी जीभ को भींच लिया। मैं अपनी कमर ऊपर नीचे करके उसकी जीभ से चुदने लगी। राजू भी अपनी जीभ आगे-पीछे, ऊपर-नीचे कर के मुझे और उत्तेजित कर रहा था।

मेरे चुत में पानी का स्तर अब बढ़ने लगा था पर मुझे तो उसके लंड की आस लगी थी, तो मैं उसके ऊपर से उठी और बोली- चलो ठीक से लेट जाओ।

मेरे ऐसा कहने से ही राजू तुरंत अपने पैर ऊपर लेते हुए आराम से लेट गया, उसका लंड पूरा ऊपर की तरफ खड़ा था। मैं पहले कि तरह उसके ऊपर बैठ गयी पर इस बार मेरी चुत के नीचे उसका लंड खड़ा था।

मैं थोड़ा थोड़ा नीचे होने लगी, उसका बड़ा लंड और उसपर का बड़ा टोपा मेरी चुत में घुसने वाला था। नीचे जाते जाते ही अचानक मेरी चुत उसके लंड से टकरा गई, उसके लंड के स्पर्श से ही मैं...

उसने अपने हाथों से अपना लंड पकड़ा और मेरी चुत की दरार में घुसाने की कोशिश करने लगा। वह मेरी चुत पर अपना लंड घिस रहा था और मैं उत्तेजना में पागल हो रही थी।

उसके लंड के घर्षण से मेरी चुत अब पानी छोड़ने लगी थी और चुत पानी लंड पर बह रहा

था। मैं उसका लंड मेरी चुत की दरार पर आने की राह देख रही थी और जैसे ही उसका लंड वहा पहुँचा मैंने झट से अपनी कमर को नीचे किया। उसके लंड का टोपा मेरी चुत में घुस गया था। उसके लंड की टोपी ने ही मेरी चुत को पूरा भर दिया था। मैं ऊपर से जोर लगा रही थी पर वह अंदर नहीं घुस रहा था और बहुत दर्द भी हो रहा था।

मैं कुंवारी नहीं थी पर राकेश का लंड और राजू के लंड में बहुत फर्क था इसलिए मेरी चुत पूरी खुली नहीं थी और उस पर राजू के लंड की टोपी बहुत बड़ी थी। तो अंदर जाते हुए बहुत दुख रहा था। पर वह लंड और वह दर्द भी मुझे मीठा लगने लगा था तो मैंने उसे और अंदर लेने का प्रयास जारी रखा।

पर मुझे वह बहुत मुश्किल लग रहा था तो मैंने ऊपर हो कर उसका लंड बाहर निकाल लिया फिर जोर से कमर को नीचे किया। अब पहले से ज्यादा लंड अंदर घुस गया था। धीरे धीरे मैं अपने कमर को ऊपर नीचे करने लगी। उस लंड के घर्षण से मेरी चुत भी पानी छोड़ने लगी उसकी वजह से लंड को अंदर घुसने में आसानी हुई और आधे से ज्यादा लंड मेरी चुत में घुस गया। मेरी गीली चुत में धंसा लंड और भी बड़ा और गरम लगने लगा।

मैं भी अपने मन को समझाते हुए उसके लंड से अपनी चुत चौड़ी कर रही थी। मैं जोर जोर से ऊपर नीचे करते हुए उसका लंड ज्यादा से ज्यादा अंदर लेने का प्रयास कर रही थी। अब तक उसने अपने हाथ मेरे स्तनों पर रख दिये थे, अपनी उंगलियों में मेरे निप्पल पकड़ कर दबाते हुए वह मेरे दोनो स्तन मसल रहा था। उसके ज़ोरों से मसलने से मेरे स्तनों में दर्द होने लगा था पर वह दर्द भी मीठा लगने लगा था।

मैं अपना नीचला होंठ दांतों में दबाकर चुत में होने वाला दर्द बर्दाश्त करते हुए ऊपर नीचे हो रही थी।

“भेमसाब आप की चुत बड़ी जालिम है.” उसके बोलने से मैं होश में आयी।

उसकी तरफ देखा तो उसके भी आंखों में आंसू थे ।

“क्या हुआ ?” मैंने पूछा ।

“दर्द हो रहा है, फट गई चमड़ी !” वह बोला ।

“क्यों, मजा नहीं आ रहा ?” मैंने पूछा ।

“मजा तो आई रहे है बहुत... हमार जोरू की नई नई चुत अइसन ही थी.” वह बोला ।

“वाओ...” मैं बोली ।

“हाँ... अइसन ही थी सुहागरात पर !” वह बोला ।

“तो क्या किया तुमने ?” मैंने पूछा ।

“फाड़ दी थी... बहुत रोई थी !” वह बताने लगा ।

” अच्छा... मगर हमें तो मजा आ रहा है.” मैं बोली ।

“आह...” वह दर्द से चिल्लाया, मैंने अचानक ही लंड पर दबाव बढ़ाया था और 70-80 प्रतिशत लंड चुत के अंदर घुस गया था ।

“मजा आया ?” मैंने हँसते हुए पूछा ।

“हाँ, कमीनी ने चमड़ी उधेड़ दी.” वह बोला ।

“चलो अब थोड़ा आराम करो.” इतना कह कर मैं उसका लंड चुत से बाहर न निकले उसके ऊपर लेट गयी और अपने होंठ उसके होठों पर रख दिये ।

मेरे होठों का स्पर्श उसके होठों को होते ही उसने मेरा निचला होंठ अपने दाँतों में पकड़ा और जोर से काटा । मैंने दर्द से अपने होठों को उसके होठों पर से अलग कर दिया । एक पल के लिए तो मेरी आंखों में पानी आ गया था, पर बाद में यह एहसास हुआ की आंखों के साथ साथ चुत से भी पानी बहने लगा था ।

उसके काटने से जितना दर्द हुआ उससे कहि अधिक मैं उत्तेजित हो गयी थी । मैं फिर से अपने होंठ उसके होठों पर ले गयी पर इस बार उसने बड़े प्यार से मेरे होठों का स्वागत

किया।

मैंने अपनी जीभ उसके मुँह में घुसा दी और उसकी जीभ से खेलने लगी। उसने भी अपनी जीभ से मेरे आक्रमण को पीछे धकेलते हुए अपनी जीभ मेरे मुँह के अंदर घुसा दी। उसकी जीभ मेरे पूरे मुँह में घूम रही थी और उसके मुँह पर मेरे काम रस की खुशबू मुझे पागल कर रही थी।

मेरी चुत से भी पानी बहने लगा था, उसका लंड और भी सख्त हो गया था, मेरे कामरस से उसका लंड पूरा भीग गया था।

मैं फिर उठ कर उसके लंड पर बैठ गयी। मुझे समझ नहीं आया कि कब उसका पूरा लंड मेरी चुत घुस गया। मैंने अपनी गांड उठाकर चुत से उसका लंड सुपारी तक बाहर निकाला और फिर से अंदर ले लिया।

इस बार ना मुझे दर्द हुआ ना उसे।

मेरी चुत अब उसके लंड के आकार की खुल गयी थी। मैं अब आराम से उसके लंड पर ऊपर नीचे हो रही थी। उसके बड़े लंड का मेरी चुत से हो रहा घर्षण मेरी उत्तेजना को और बढ़ा रहा था। वह भी अब जोश में आ गया था और नीचे से धक्के देने लगा था। मैं भी अपनी गांड हवा में रखकर उसको धक्के देने के लिए जगह बना के दे रही थी।

“मेमसाब हमार मक्खन... बाहर...” वह इतना ही बोल पड़ा कि मुझे समझ में आ गया कि वह झड़ने के करीब आ गया है तो मैं झट से उसके ऊपर से हटी। तभी उसका बांध छूट गया और पहली पिचकारी दो तीन फीट ऊपर उड़ी पर बाकी की उसके लंड से ही नीचे बहने लगी।

“अच्छा हुआ तुमने बता दिया.” बोल कर मैंने उसके झटके खाते लंड से वीर्य की एक बूंद को अपने उंगली पे लिया और उंगली मुँह में डाल दी।

“वाह... बहुत बढ़िया है...” उसकी तरफ देखकर मैंने उसे आंख मारी, उस पर उसने हँसते

हुए अपनी आंखें बंद कर दी।

वह हमारी पहली चुदाई थी पर हमारी कामक्रीड़ा इसी तरह चलती रही। बाद में राकेश टूर पर भी चला जाए मुझे कोई फर्क नहीं पड़ने लगा क्योंकि मुझे अब हक का मूसल मिला था, वो भी किसी को पता चले बिना।

पर पिछले महीने बहुत बड़ी प्रॉब्लम हो गयी। राकेश दो महीने के लिए टूर पर गया था, तब हमेशा की तरह हम एक दूसरे में खोये थे। जी भर कर चुदने के बाद हम उठकर तैयार होने ही वाले थे कि उतने में राकेश आ गया और उसने हमें रंगे हाथों पकड़ लिया। उसके बाद हम दोनों के बहुत झगड़े हुए। राकेश ने राजू को घर से निकाल दिया और मुझे मुँह ना खोलने के शर्त पर घर में रख लिया।

राकेश भी अब सारे टूर कैंसिल कर के घर में ही रहता। जैसे कि वह मेरा वॉचमैन ही हो। मैं किसी को कुछ बता भी नहीं सकती थी आज तुम्हें सरप्राइज देने के लिए मैं जल्दी यहाँ आ गयी, दो बजे, तब राजू ने दरवाजा खोला।

उसे देखते ही मेरी चुत ने पानी छोड़ा और हम फिर से एक हो गए।

“पर सीमा, इतना कुछ हुआ, तुमने मुझे बताया क्यों नहीं?” मैं उसकी कहानी सुनकर बोली।

“कैसे बताती, पहले तो मैं कामक्रीड़ा में व्यस्त किसी की परवाह नहीं थी और बाद में राकेश ने मुझे किसी को बताने के लिए मना किया था।”

“हम्म अच्छा...” मैं बोली।

सीमा ने अपनी घड़ी की तरफ देखा तो शाम के सात बजे थे, वह जल्दी से उठी और मुझे बोली- चलो दीदी, मैं चलती हूँ... राकेश मेरी राह देख रहा होगा... नहीं तो वह इधर आ जायेगा... और उसने राजू को यहां देख लिया तो मेरी खैर नहीं!

ऐसा बोलकर वह बाथरूम जाकर फ्रेश हुई और चली गई।

सीमा चली तो गयी पर मेरे अंदर आग लगाकर गयी। उसकी शादीशुदा जिंदगी में और मेरी शादीशुदा जिंदगी में ज्यादा फर्क नहीं था। जैसे राकेश दूर पर होता था वैसे ही नितिन दूर पर होता था। इसकी वजह से मेरी भी सेक्सुअल हैरेसमेंट हो रही थी। सेक्स करने से पहले कुछ ज्यादा फर्क नहीं पड़ता है पर एक बार सेक्स करो तो सेक्स की भूख बढ़ जाती है, या यु कहो कि उस भूख का अहसास हो ज्यादा है और फिर वह भूख अब जरूरत बन जाती है।

तो दोस्तो, क्या मैं अपनी भूख को अपने अंदर ही मार कर घुट घुट कर जीती रहूं, या फिर अपनी बहन की तरह राजू के साथ अपने अंदर लगी सेक्स की आग को शांत कर लूं? मुझे मेल करके अपनी राय बताएं!

nitupatil4321@gmail.com

